नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में मनाया विश्व रंगमंचदिवस
मैकबैथ, अंधेर नगरी, इडिपस, दुतवाक्यम, आदिम रंगमंचनाटकों का मंचन
प्रदर्शनकारी कला विभाग का आयोजन

वर्धा, 31 मार्च, 2017 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में विश्व रंगमंच दिवस, 27 मार्च को बड़े धूमधाम और उत्साह के साथ मनाकर विद्यार्थियों ने रंगकर्म की मशाल को निरंतर जलते रहने का संदेश दिया। इस

उपलक्ष्य में दुनिया में मशहूर एवं रंगमंच के क्रमबद्ध तरीके से हुए विकास को दर्शाने वालेनाटकों जैसे शेक्सपियर का मैकबैथ, भारतेंदु हरिश्चंद्र का अंधेर नगरी, ग्रीक का इडिपस, भास का दुतवाक्यम और आदिम रंगमंच इन नाटक विद्यार्थियों ने प्रस्तुत कर इस दिवस को यादगार बना डाला।

विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला विभाग की ओर से यह आयोजन किया गया था। नाट्य प्रस्तुतियों की परिकल्पना, समन्वय एवं निर्देशन सहायक प्रोफेसर सुरभि विप्लव का था तथा निर्माण एवं संयोजन वरिष्ठ रंगकर्मी

सहायक प्रोफेसर डॉ. सतीश पावड़े का था। गालिब सभागार में नाट्यमंचन के अवसर पर कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र,

प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, डॉ. उषा शर्मा, साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. के. के. सिंह सहित अध्यापक, अधिकारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्यामें उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय में पहली बार इतने बड़े पैमाने पर अनेक नाटकों के मंचन के साथ रंगमंच दिवस को मनाया गया। नाट्यमंचन से पूर्व विद्यार्थियों ने अलग-अलग वेश भूषा धारण कर समता भवन से एक रंगयात्रा निकाली गयी।

साहित्य विद्यापीठ के भवन में पहुंचकर वहाँ विद्यार्थियों ने आदिम रंगमंच की प्रस्तुति दी जिसमें अभय कुमार, अमित, शताक्षी मिश्र, अंकुश डांगे, आकाश कांबले, पुनेश, देवेश दुबे, विजय कुडिया, अभिषेक ठाकुर, विष्णु कुमार ने

अभिनय किया। इसका निर्देशन विष्णु कुमार ने एवं सह निर्देशन अभिषेक ठाकुर ने किया। शेक्सपियर का सुप्रसिद्ध नाटक मैकबैथ में आकाश कांबले, शिव कुमार, धर्मराज, शिवम कुमार, खुशबु गर्गेलवार, उपासना गौतम, रामलखन, दिव्यांश रंजन, प्राची पाटील, रश्मी गोंडाने, अश्विनी रोकड़े, राहुल भालेराव, विश्वभूषण खैरकार ने भूमिकांए की।

नाटक का सह निर्देशन कृष्ण मोहन का था। निर्देशन सुरभि विप्लव का था। नाटक का वस्त्र विन्यास अर्चना वर्मा एवं दीप्ति का तथा मंच विन्यास राम लखन, शिव कुमार एवं धर्मराज का था।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के अंधेर नगरी नाटक में अनूप, विष्णु,मनीष, धर्मेंद्र तिवारी, सुमन, श्वेता सचान, साधना, धर्मराज, सागरिका नायक, नवीन कुमार मौर्य, अमित कुमार, सुमन, साधना, गौरव, आरती और शैंकी जैन ने अलग-अलग पात्रों की भूमिकाएं की। नाटक का संगीत निर्देशन श्याम प्रकाश ने एवं प्रकाश व्यवस्था सुहास नगराले ने संभाली। निर्देशन सुरभि विप्लव का तथा सह निर्देशन विजय कुमार एवं प्रितेश पाण्डेय का था। वस्त्र विन्यास श्वेता सचान व विष्णु कुमार का था। ग्रीक नाटक इडिपस में शिशु कुमार, दीप्ति ओगरे, शैंकी जैन, राजेश अहिरवार, कंचन, प्रितेश पाण्डेय, अशोक बैरागी ने अभिनय किया। नाटक का निर्देशन प्रितेश पाण्डेय का था।

भास लिखित दुतवाक्यम नाटक में दिव्यांस रंजन,मलय वर्मण,राहुल, सुरभि, महिपाल त्रिपाठी, हिमांशु तिवारी, सुनील सिंहनविन, गौरव,कुणाल ने भूमिकाएं निभाई। नाटक का संगीत अलोक निगम, सहनिर्देशन दिव्यास रंजन एवं सुरभि का और निर्देशनडॉ. अलोक पाण्डेय का था। नाटकों के पात्रों की रूपसज्जा डॉ. विलास पकडे,अक्षय गवई, बंशी और दीप्ति ने संभाली। आयोजन को लेकर निर्देशक सुरभि विप्लव ने कहा कि विद्यार्थियों के लिए विद्यार्थियों द्वारा इन प्रस्तुतियों के माध्यम से एक नए रंगकर्म की शुरूआत हुई है। उन्होंने माना कि विद्यार्थियों का उत्साह और उमंग को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि रंगकर्म की मशाल को निरंतर जलती रहेगी।

आयोजन में बी.एस. मिरगे, राजेश लेकहपुरे, लेखराम दन्नाना, राजेंद्र घोडमारे,हिमांशु नारायण, प्रगति मिरगे, ग्यासुद्दीन खान, अभिषेक कुमार, अश्विनी कुमार, अविचल गौतम,विद्यासागर देवले, राजदीप राठौर, निखिल खोड़े, आकाश, सद्दाम हुसैन, सुनील गावस्कर,अर्चना वर्मा, शुभम, बंशी, सौरभ गुप्ता, गणेश ने सहयोग प्रदान किया।